Received: Jul '23
Revised:
Accepted: Aug '23

© 2023 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

PROBLEMS AND SOLUTIONS RELATED TO URBAN LAND USE, TRANSPORT, AND COMMUNICATION IN HANUMANGARH DISTRICT

हनुमानगढ़ जिले में नगरीय भूमि उपयोग एवं परिवहन व संचार सम्बन्धी समस्याएं एवं समाधान

Dr. Ajay Sihag[1] and Dr. Sanjeev Kumar Bansal[2]
[1]Assistant Professor, Department of Geography, DAV College, Sri Ganganagar, Rajasthan, India
[2]Assosiate Professor & Head (ABST), Govt. N.M. College, Hanumangarh, Rajasthan, India

ABSTRACT

There are two basic factors at the origin of present urban land use and transport and communication-related problems: continuous growth in the urban population and increasing urbanisation. Human interference directly or indirectly affects natural resources. An increase in the birth rate and urban attractions encourage the expansion of cities, which results in a continuous increase in the population of cities. When there is population pressure on cities, overexploitation of natural resources starts to meet the needs of the population. This feature of the city promotes urbanisation and affects other related issues as well, such as the urban land use pattern, transport, and communication. In the research paper, "Problems and solutions of urban land use, transport, and communication" have been studied, and suggestions have also been presented as far as possible.

वर्तमान नगरीय भूमि उपयोग एवं परिवहन व संचार संबंधी समस्याओ की उत्पत्ति में दो मूल कारक हैं, नगरीय जनसंख्या में लगातार वृद्धि तथा बढ़ता शहरीकरण प्रमुख है। मानवीय दखल प्राकृतिक संसाधनों पर परोक्ष या अपरोक्ष रूप से प्रभाव डालता है। जन्म दर में वृद्धि और शहरी आकर्षण नगरों के विस्तार को प्रोत्साहित करते हैं जिसका परिणाम नगरों की जनसंख्या में लगातार वृद्धि का होना है जब नगरों पर जनसंख्या का दबाव पड़ता है तो जनसंख्या की आवश्यकता की पूर्ति हेतु प्राकृतिक संसाधनो का अति दोहन शुरू हो जाता है। नगर की यही विशेषता शहरीकरण को बढ़ावा देती है और अन्य सम्बन्धित मुद्दों को प्रभावित करने के साथ–साथ नगरीय भूमि उपयोग प्रतिरूप एवं परिवहन व संचार पर भी प्रभाव डालती है। शोध पत्र में "नगरीय भूमि उपयोग एवं परिवहन व संचार की समस्या व समाधान" का अध्ययन किया गया है और यथासंभव सुझाव भी प्रस्तुत किए गए हैं।

मुख्य शब्द– संस्कृति, भूमि उपयोग, व्यापार, नगरीकरण, औद्योगिक क्षेत्र।

प्रस्तावना

किसी नगर, शहर, ग्राम की भूमि उपयोग स्तर वहां की समस्त गतिविधियों पर टिका है वहां के नागरिकों द्वारा भूमि उपयोग का तरीका ही वहां की सास्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक दशाओं का निर्धारक होता है। उस क्षेत्र के तीव्र गति से किए जाने वाले विकास के साथ कुछ समस्याएं भी उत्पन्न हो जाती हैं, जिसे हल किए बिना एक कुशल भूमि उपयोग संभव नहीं है ऐसी ही कुछ समस्याएं हनुमानगढ़ जिले की नगरीय भूमि उपयोग एवं परिवहन व संचार के संदर्भ में किए गए विश्लेषण से स्पष्ट है।

अध्ययन क्षेत्र

हनुमानगढ़ जिला राजस्थान के उत्तर में घग्घर नदी के दोनों तटों पर स्थित है। नदी के उत्तर कि ओर टाऊन व दक्षिण की ओर जंक्शन स्थित है हनुमानगढ़ जिला $29^0$5′ उत्तरी अक्षांश से $30^0$6′ उत्तरी अक्षांश व $74^0$3′ पूर्वी देशांतर से $75^0$3′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। प्राचीन काल में हनुमानगढ़ को युद्धेय कहा जाता था। यहां एक प्राचीन किला है जिसका नाम भटनेर था। भटनेर भट्टी नगर का अपभ्रंश है, जिसका अर्थ भट्टी अथवा भाटियों का नगर है। भारत के पश्चिम में स्थित होने के कारण इस किले को पश्चिम का पहरी भी कहा जाता है। यहां स्थित भटनेर दुर्ग को 285 ईसा में भाटी वंश के राजा भूपत सिंह भाटी ने बनवाया इसलिए इसे भटनेर कहा जाता है। मंगलवार को दुर्ग की स्थापना होने के कारण हनुमान जी के नाम पर इस जिले को हनुमानगढ़ कहा जाता है।

इस जिले को 12 जुलाई 1994 को श्रीगंगानगर से अलग करके इसे राजस्थान का 31 वां जिला बनाया गया। इस जिले की सीमा पंजाब व हरियाणा से लगती है। यहां की कुल जनसंख्या 11774692 है जिसमें 931184 पुरूष व 843508 महिला है। कुल जनसंख्या मै से नगरीय जनसंख्या 350464 (19.75:) व ग्रामीण जनसंख्या 1424228 (80.25:) है यहां राजस्थान की सबसे बड़ी नहर परियोजना इंदिरा गांधी नहर परियोजना तथा भाखड़ा नहर का आरंभ यहीं से होता है। प्रशासनिक दृष्टि से

जिले में 7 तहसील, 7 उपखंड, 7 पंचायत समितियां, 251 ग्राम पंचायत, 1 नगर परिषद, 5 नगर पालिका, 1831 आबाद ग्राम व 303 पटवार वृत स्थित है।

उदेश्य

1. अध्ययन क्षेत्र मे नगरीय भूमि उपयोग सम्बन्धी समस्याओ का परिकलन करना।
2. अध्ययन क्षेत्र मे परिवहन व संचार सम्बन्धी समस्याओ का परिकलन करना।
3. अध्ययन क्षेत्र में नगरीय भूमि उपयोग एवम परिवहन व संचार सम्बन्धी समस्याओ को जानना व उनके समाधान का विश्लेषण करना।

परिकल्पना

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत हनुमानगढ़ जिले में नगरीय भूमि उपयोग एवं परिवहन व संचार सम्बन्धी समस्याओं को समझने का प्रयास किया गया है साथ ही उन समस्याओं के समाधानो का सर्जन किया गया है।

विधि तंत्र

हनुमानगढ़ जिले में नगरीय भूमि उपयोग एवं परिवहन व संचार समस्या व समाधान के लिए इसकी विस्तृत श्रृंखला और उसके व्याख्या की आवश्यकता होगी। अध्ययन के लिए डाटा के दो प्रमुख स्रोतों का उपयोग किया गया है। पहले प्राथमिक डाटा, अध्ययन के दौरान व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित है जिसमें प्रश्नावली कार्यक्रम, साक्षात्कार तथा अवलोकन शामिल है। द्वितीयक डाटा हेतु शासकीय संस्थानों, भारत की जनगणना–2011, जिला सांख्यिकी पुस्तिका, शोध पत्रिका आदि का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए जिले के समस्त विकास खंडों को आधार माना है तथा आंकड़ों का संकलन जिला सांख्यिकी पुस्तिका कृषि विभाग एवं भू–अभिलेख कार्यालय से प्राप्त किए हैं।

समस्याएं

1. आवासीय व्यवस्था– जिले के प्रमुख नगरों में आज आवास के लिए कोई भी अलग ढंग से व्यवस्था नहीं की गई है और न ही कोई नई कॉलोनियों का उचित ढंग से निर्धारण किया गया है जिससे क्षेत्र विशेष में मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति में सरकारी व्यय अधिक लगता है इसका उदाहरण जिले की पुरानी बसी आबादी के रूप में देखा जा सकता है।

2. अतिक्रमण की समस्या– वर्तमान में शहरी लोगों द्वारा अपनी सुविधाए के लिये निर्धारित भूमि आवंटन के अतिरिक्त भूमि का उपयोग किया जाता है जिससे उस स्थान पर सड़क की स्थिति में परिवर्तन हो जाता है उस क्षेत्र पर असामाजिक कीर्याय अधिक होने लगती है सरकार द्वारा निर्धारित योजनाओं का उचित लाभ नहीं मिल पता है। यहा समस्या जिले की सभी मंडियों की मुख्य सड़कों के किनारे देखने को मिलती है, जिससे सभी आवागमन के साधनों और नागरिकों को समस्या का सामना आए दिन करना पड़ता है

3. व्यापारिक सुविधाओं का अभाव– किसी नगर का विकास उस नगर द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं पर निर्भर करता है। उस नगर द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं का स्तर उसके विकास का घोतक है लेकिन वर्तमान समय में जिले में ऐसे क्षेत्र का कोई उचित निर्धारण में होने तथा नियमों का पालन न करने के कारण जिले में अनेक मंडिया ऐसी है जिनका विकास रुक सा गया है। जैसे रावतसर, नोहर, भादरा, पीलीबंगा आदि इन्हीं कारण जिले में उचित व्यापार का विकास नहीं हो पा रहा है

4. अनियत्रित ढंग से नगरीकरण– हनुमानगढ़ जिले में नगरीकरण में तेजी से वृद्धि हुई है। यहाँ की दशकीय वृद्धि दर 2001–2011 के दोरान 16.91ः रही है तथा पिछले दशक 1991–2001 में यहाँ की वृद्धिदर 24.39ः रही थी। यहा की 2001 की कुल जनसंख्या 1518005 थी जिसमे पुरुष जनसंख्या 801486 व महिला जनसंख्या 716519 थी जो 2011 में बढ़कर 1774692 हो गई जिसमे पुरुषों की सख्या 931184 व महिलाओं की सख्या 843508 हो गई।

5. वर्षा जल की समस्या– प्राचीन काल में जितने भी नगरों का विकास हुआ था उनमे वर्षा जल की निकासी की व्यवस्था बहुत ही सुनियोजित व ढाल के अनुरूप ही नालियों का विकास किया जाता था। लेकिन वर्तमान में कुछ जगह वर्षा जल की निकासी की पर्याप्त व्यवस्था नही है जो की एक गभीर समस्या है।

उपाय/समाधान

1. भविष्य की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए शहर में संगठित औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना हेतु प्रावधान रखा जाना चाहिए तथा नगर के समीप प्रदूषण करने वाले उद्योगों की स्थापना की स्वीकृति न देकर कड़े नियमों को बनाया जाना चाहिए।
2. नगर की परिधि पर किसी प्रकार के अपेक्षित विकास को नियंत्रित करने के उद्देश्य से स्थानीय सीमाओं के चारों ओर एक परिधि नियंत्रण पट्टी बनाई जाए।

परिधि नियंत्रण पट्टी के अंदर की ग्रामीण बस्तियों के विकास को नियंत्रित एवं नियोजित किया जाना चाहिए।

3. आवासीय घनत्व और स्वीकृति योजना मानदेय की पद्धति के अनुरूप संपूर्ण नगरीय क्षेत्र में सामुदायिक सुविधाओं, सार्वजनिक उपयोगिता और सेवाओं का विवेक सम्मत वितरण किया जाना चाहिए।
4. संकरी नगरीय सड़कों पर भारी यातायात को निषेध करने और उसे अन्यत्र संचालित करने के लिए उपयुक्त स्थल निर्धारित कर अनायास भवन निर्माण सामग्री लकड़ी और लोहा बाजार आदि को जो आर्थिक यातायात को प्रोत्साहन देते हैं के थोक बाजारों हेतु पर्याप्त भूमि आरक्षित की जानी चाहिए और यह भूमि मुख्य बाजार को ध्यान में रखकर भीड़–भाड़ वाले इलाके से बाहर होनी चाहिए।
5. बड़े नगरों में यातायात के तीव्र गति से बढ़ रहे साधनों के कारण उत्पन्न समस्या एवं सड़क को का पर्याप्त विस्तार किया जाए। वर्तमान में हनुमानगढ़ जिले में यातायात समस्या से निजात पाने के लिए ओवर ब्रिज और अंडरपास का निर्माण किया गया है जिससे यातायात संबंधी समस्याओं का समाधान हो सके।
6. नगरों के परिसंचरण प्रतिरूप की एक ऐसी पदानुक्रमी व्यवस्था निश्चित की जाए की इसमें विभिन्न प्रकार की सड़कों और गलियों का अनुकूल उपयोग किया जा सके।

परिवहन व संचार संबंधी समस्याएं व समाधान

1. परिवहन एवं संचार किसी क्षेत्र, नगर, जिले के विकास की रीड की हड्डी होते हैं क्योंकि विकास परिवहन एवं संचार पर निर्भर करता है। पिछले कुछ वर्षों में जिले में परिवहन व संचार के साधनों में आशातीत वृद्धि हुई है लेकिन फिर भी कई क्षेत्र व स्थान ऐसे हैं जहां आज भी इन सुविधाओं का अभाव पाया जाता है।
2. इसके अतिरिक्त मुख्य व अन्य सड़कों को संचार विभाग द्वारा जगह जगह पर तोड़ना और उनमें अपनी तारों को बिछाना जिसमें एक अच्छी सड़क की हालत गंभीर कर दी जाती है। नगर की प्राचीन बस्तियों में आज भी खड्डों की सड़कें हैं जो इतनी पुरानी हो गई है कि उन पर कंक्रीट का कोई नाम न रहकर एक ग्रामीण सड़क से भी बदतर हो गई है। ऐसे में उस बस्ती के लोगों पर क्या प्रभाव रहता है इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।
3. जिले में संचार के साधनों का विकास अन्य जिलों की अपेक्षा कम ही हुआ है जिले में पोस्ट ऑफिस की कुल संख्या 229, तारघर 0, टेलीफ़ोन केन्द्र 71, एस.टी.डी .पी.सी.ओ.(शहरी) 163, एस.टी.डी. पी.सी. ओ. (ग्रामीण) 56 व लेटर बॉक्स 773 हैं।

उपाय/समाधान

1. जिले की मुख्य सड़कों की स्थिति में सुधार लाया जाए तथा सड़क अतिक्रमण पर कड़ी कार्रवाई की जाए और जिले में यातायात के नियमों का सख्ती से पालन करवाया जाए तथा हेलमेट सभी दोपहिया मोटर वाहन के लिए अनिवार्य कर दिया जाए व यातायात के नियमों के उल्लंघन करने वालों के प्रति सख्ती से पेश आया जाए।
2. जिले में प्रत्येक गांव में उपयुक्त संचार की व्यवस्था के लिए उचित सुविधाएं प्रदान की जाए। जिस गांव में संचार के साधनों का अभाव है उस गांव को रेखांकित कर ऋण प्रदान कर सुविधाओं को प्रोत्साहन प्रदान किया जाए।
3. जिले में पोस्ट ऑफिस की संख्या को बढ़ाकर प्रत्येक 15000 व्यक्तियों पर एक पोस्ट ऑफिस की व्यवस्था की जाए और इनके बीच की दूरी कम कर दी जाए इसके साथ ही साथ प्रत्येक गांव में पोस्ट ऑफिस की ब्रांच का विकास किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

नगरीय भूमि उपयोग के वर्गीकरण की आवश्यकता नगरीय भूमि उपयोग और व्यवस्थित उपयोग हेतु किया जाता है, जिसमें भूमि का एक इंच हिस्सा भी व्यर्थ ना जाए। जनसंख्या वृद्धि और शहरीकरण के कारण यह कार्य नितान्त आवश्यक हो गया है कि नगरीय भूमि उपयोग एवं परिवहन व संचार को नियोजित तरीके से ही किया जाए। जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण और शहरीकरण के फैलाव को नियोजित करके भूमि दबाव व परिवहन व संचार की समस्याओं को कम किया जा सकता है। नगरीय भूमि उपयोग एवं परिवहन व संचार की समस्या व समाधान अध्ययन की सार्थकता प्रमाणित हो सके इसके लिये आकड़ो के विश्लेषण के उपरांत यह निष्कर्ष निकलता है कि नगरी भूमि उपयोग व परिवहन व संचार में निरंतर बदलाव जारी है जो पर्यावरणीय दृष्टिकोण से उचित नहीं है। भूमि संसाधन पर मानव का निरंतर

हस्तक्षेप से पर्यावरण पारिस्थितिकी को बिगाड़ रहा है। अतः यह जरूरी है कि हम भूमि का उपयोग करने हेतु नई तकनीक विकसित करें जिससे मानव की आवश्यकता की पूर्ति भी होती रहे और भूमि संसाधन की क्षति भी न हो, क्योंकि भूमि ही अन्य संसाधनों का आधार है अगर भूमि पर संकट आया तो इसका प्रभाव अन्य संसाधनों पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूप से पड़ेगा।

संदर्भ

1. शर्मा, सुरेष चन्द्र (1970) : जिला इटावा में भूमि उपयोग, उत्तर–भारत भूगोल पत्रिका, अंक 6
2. सिंह, बी.वी. एवं सिंह एस.जी. (1974) : शस्य समिश्रण विधि अध्ययन में एक पुनर्विलोकन उत्तर–भारत भूगोल पत्रिका अंक 10, संख्या 1–2, पृष्ठ 1–4
3. सिंह जगदीष एवं सिंह बी.आर. (1981) : कृषिगत गहनता एवं विविधता तथा ग्रामीण विकास : गोरखपुर तहसील का प्रतिकात्मक अध्ययन, अंक 17, संख्या 1, पृष्ठ 1–11
4. सिंह रामबली एवं पाण्डेय, श्रीकान्त (1970) फरेन्दा तहसील में जनसंख्या घनत्व एवं भू वैन्यासिककालिक विष्लेषण, उत्तर भारत का भूगोल पत्रिका, अंक 15, संख्या 2, पृष्ठ 121
5. Govt. of India : Co-odination of Agricultural Statstics in India, Minstry of Agriculture (1960), P-144.
6. Stamp. L.D. (1956): The land of Britan, its use and misure hongman Grean & Co. Ltd. London P-426
7. http://censusindia.gov.in
8. Annual Report, Department of Statistical, Hanumangarh (Raj.)